भूमिका

पाँच छ: साल पहले मैंने प्रथम बार डॉ. शेष के नाटक ` खजुराहो का शिल्पी ` और ` फन्दी ` पढे थे । विषयों का अनूठापन, शिल्प की विविधता और प्रभावी भाषाशैली के कारण ये नाटक मेरे मनोमस्तिष्क पर सदा छाये रहे । आगे जब डॉ. शेष की विविध-आयामी, समृध्द रचनासृष्टि का परिचय मिला, तब एक आश्चर्य मिश्रित कौतूहल मनमें जाग उठा । मेरी रूचि के अनुसार मुझे एम्.फिल. की परीक्षा के लिए विशेष साहित्य विधा के रूप में ` नाटक ` विषय रखने की सुविधा मिली । उस समय डॉ. शेष के बीस से ज्यादा नाटकों को लेकर प्रबंध प्रस्तुत करना अनावश्यक महसूस हुआ तब मैंने डॉ. शेष के एक ही नाटक ` खजुराहो का शिल्पी ` को लेकर प्रबंध प्रस्तुत करने का निर्णय लिया ।

इस नाटक में डॉ. शेष ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मानवीय जीवन संबंधी शाश्वत सत्य को प्रस्तुत किया है । मानव जीवन में ` मोक्ष ` का स्थान जरूर ऊँचा है, लेकिन ` काम ` का भी अपना महत्व है । मानव जीवन में ` मोह ` के क्षण ` निरंतर आते रहते हैं । मानव अनायास ही इन क्षणों का शिकार बन जाता है । और जब होश में आ जाता है तब उनसे दूर भागने का प्रयत्न करता है । लेकिन उसके प्रयत्न की सफलता अथवा असफलता केवल नियति के हाथों में होती है । इस स्थिति में मनुष्य केवल विवश बनकर रह जाता है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में पाँच अध्याय हैं । प्रथम अध्याय में हिन्दी नाटकों के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत करनेका प्रयास किया है । इसमें मराठी के आद्य नाटककार विष्णुदास भावेजी के हिन्दी नाट्यप्रस्तुति के प्राथमिक प्रयासों से लेकर आधुनिक काल में प्रचलित विविध नाट्यपध्दतियों तक का उल्लेख आया है । हिन्दी नाट्य साहित्य में आये युगानुरूप परिवर्तन की प्रस्तुति यहाँ हुई है ।

आधुनिक काल में नाटक को प्रतिष्ठा दिलाने के हेतु रंगमंच के साथ रेडियो तथा दूरदर्शन आदि प्रसार माध्यमों के लिए भी नाटक लिखे जा रहे हैं। डॉ.शेष ने भी इस बात के महत्व को जानकर रेडियो तथा दूरदर्शन के लिए अनेकानेक स्कीकी और नाटकों की रचना की है।

द्वितीय अध्याय डॉ. शेष के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित है। डॉ. शेष का जीवन परिवर्तनों से पूर्ण रहा है। इसी कारण उनके नाटकों में जहाँ आदिवासी समाज की समस्याओं का चित्रण हुआ है, वहाँ महानगरीय जीवन के संत्रास का प्रकटीकरण भी हुआ है। अनछुए विषयों को अपने नाटकोंद्वारा प्रकट करना डॉ. शेष का एक वैशिष्टय रहा है। महाभारतीय पात्रों के जीवन का गहरा प्रभाव डॉ. शेष पर रहा है। ये पात्र उनके अनेक नाटकों और उपन्यास के विषय बने हैं।

यह प्रतिभावान साहित्यिक एक भाषा वैज्ञानिक भी था। उनका अनुसंधान कार्य इसी क्षेत्र से संबंधित रहा है।

तीसरे अध्याय में नाट्यकला की दृष्टि से ` खजुराहो का शिल्पी ` का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसमें कथ्य और शिल्पगत विविध बातों का विवेचन किया गया है। ` खजुराहो का शिल्पी ` साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत सशक्त नाटक सिध्द हुआ है। लेकिन उसमें कतिपय दोष भी है, इस अध्याय में इन दोषों का उल्लेख भी हुआ है।

चौथे अध्याय में ` खजुराहो का शिल्पी ` की मंचीयता के संबंध में चर्चा करते हुए नाटक की प्राचीन रंगमंच से लेकर आधुनिक हिन्दी रंगमंच तक की यात्रा का अत्यंत संक्षेप में विवेचन किया गया है। वस्तुत: डॉ. शेष ने ` खजुराहो का शिल्पी ` की रचना रेडियो-नाटक के रूप में की है। भारत की लगभग सभी भाषाओं में अनूदित होकर आकाशवाणी के राष्ट्रिय प्रसारण में

एक साथ सभी केंद्रोंपर प्रसारित होने का सम्मान इस नाटक को प्राप्त हुआ था। इस नाटक ने नाटककार शेष का नाम देश के सुदूर कोने तक पहुँचा दिया। रेडियो शिल्प के होते हुए भी मंचन की संभावनाएँ इस नाटक में जरूर हैं। यथार्थ और प्रतीक रंगमंच का प्रयोग करके `खजुराहो का शिल्पी` का मंचन सफलता-पूर्वक किया जा सकता है। श्री. उत्तमसिंह तोमर द्वारा बम्बई में इस नाटक की सफल प्रस्तुति इसी बात की पुष्टि करती है।

साहित्यिक और प्रायोगिक - दोनों मूल्यों की दृष्टिसे `खजुराहो का शिल्पी` एक सफल नाटक रहा है।

पाँचवे और अंतिम अध्याय में उपर्युक्त चार अध्यायोंका विवेचन निष्कर्ष रूप में दिया गया है। मूलकथ्य, चरित्र निर्माण, रेडियो शिल्प और मंचीयता तथा दोषों को यहाँ पर सूक्ष्म में प्रस्तुत किया गया है।

प्रबंध के अंत में सहायक संदर्भ ग्रंथ और आधार ग्रंथों की सूचि दी गयी है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का कार्य अनेक मान्यवर व्यक्तियों की शुभ-कामनाओं और शुभाशिषोंका फल है। मैं इन सबकी हृदयसे आभारी हूँ। प्रस्तुत शोध-कार्य के लिए श्रध्देय डॉ. व्ही.व्ही. द्रविडजी जैसे विद्वान गुरूवर मुझे मार्गदर्शक के रूप में मिले इसे मैं अपना अहोभाग्य मानती हूँ। अनगिनत महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने जिस आत्मीयता से मुझे मार्गदर्शन दिया, मेरी असंख्य गलतियों को सुधारा, उसके लिए मैं उनके प्रति अत्यंत कृतज्ञ हूँ। उनके अनमोल सहकार्य के बिना यह शोध-कार्य कदापि संपन्न न हो सकता। इस गुरू ऋण से मैं आजीवन मुक्त नहीं हो सकती।

मेरे पूज्य माता-पिता और परिवार के सभी सदस्योंसे मुझे सदैव प्रोत्साहन ही मिलता रहा । उन सभी की प्रेरणा के कारण ही मैं यहाँ तक पहुँच सकी हूँ । साथ ही जिन परिचित, अपरिचित लोगों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई हैं, उनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय तथा राजाराम महाविद्यालय के ग्रंथालय से हुई थी । अत: ग्रंथालय के पदाधिकारियों के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ । कुछ अनुपलब्ध संदर्भग्रंथों के कारण यह शोध-कार्य थम-सा गया था । उनकी उपलब्धि मा. प्रा. श्री. स्न.आर. रानभरेजी के प्रयासों से हो सकी । उनकी इस उदारातिशयता के लिए मैं उनकी सदैव ऋणी रहूँगी ।

इस शोध प्रबंध का पूरा टंकन कार्य करनेवाले श्री. कवडे के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ ।

प्रस्तुत विषय के अध्ययन का मेरा प्रयास दोषरहित है, ऐसा नहीं कह सकती । फिर भी इस प्रयास से किसी को अगर थोडा भी लाभ मिल जाए तो मैं स्वयं को धन्य समझूँगी ।

मेरा यह प्रयास स्वनामधन्य नाटककार डॉ. शंकर शेष के प्रति एक आदरांजली है ।

कु.सुरेखा चिं.जोशी

कोल्हापूर

दिनांक 30-12-८८